www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 30 सितंबर 2019

दैनिक जागरण

यह संसार परिणामों का अभिलाषी है, प्रयत्नों का नहीं

प्याज का संकट

प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध के फैसले के बाद यह उम्मीद की जा रही है कि उसके बढ़ते दामों पर लगाम लगेगी, लेकिन यह रातों-रात नहीं हो सकता। प्याज के निर्यात पर तत्काल प्रभाव से पाबंदी का निर्णय इसलिए लेना पड़ा, क्योंकि घरेलू बाजार में उसकी उपलब्धता बढ़ाने के लिए उठाए गए कदम प्रभावी नहीं साबित हो रहे थे। सच तो यह है कि प्याज की किल्लत बढ़ती ही जा रही थी। कहीं-कहीं तो उसके दाम 70-80 रुपये प्रति किलो तक पहुंच गए थे। ऐसा तब हुआ जब प्याज का न्यूनतम निर्यात मूल्य तय करने के साथ ही उसकी कालाबाजारी रोकने की कोशिश की जा रही थी। सरकार को यह पता होना चाहिए कि एक बार किसी आवश्यक वस्तु की किल्लत पैदा हो जाए तो फिर उसकी कालाबाजारी रोकना मुश्किल होता है। सरकार और खासकर खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण और उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के अधिकारियों को यह भी सामान्य जानकारी होनी चाहिए कि बारिश में प्याज की आपूर्ति प्रभावित होती ही है। समझना कठिन है कि वे यह अनुमान क्यों नहीं लगा सके कि पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी प्याज उत्पादक राज्यों में बारिश की वजह से उसकी आपूर्ति पर असर पड़ सकता है?

यह अच्छी बात नहीं कि केंद्र सरकार के पास प्याज का पर्याप्त भंडार होने के बावजूद उसके दाम बेलगाम हो गए। यह स्थिति यही बताती है कि हमारे नीति-नियंता किस तरह समय रहते सामान्य स्थितियों का अनुमान लगाने में नाकाम रहते हैं। इस नाकामी का कोई उपचार खोजा ही जाना चाहिए, क्योंकि यह पहली बार नहीं है जब प्याज के बढ़े दाम सरकार के लिए सिरदर्द साबित हुए हों। हाल के समय में एक नहीं अनेक बार यह देखने को मिला है कि प्याज अथवा अन्य किसी आवश्यक उपभोक्ता सामग्री की किल्लत के कारण सरकार को परेशानी उठाने के साथ ही अपयश का भी सामना करना पड़ा। कई बार तो उसे राजनीतिक नुकसान भी झेलना पड़ा है। यह आश्चर्यजनक है कि आवश्यक वस्तुओं की किल्लत से उपजी विपरीत परिस्थितियों से कई बार दो-चार होने के बावजूद सार्वजनिक वितरण प्रणाली से जुड़े नौकरशाह ऐसे उपाय नहीं कर पाए हैं जिससे वही कारण बार-बार समस्या न बनने पाएं जो पहले भी बनते रहे हैं। प्याज के संकट ने जिस तरह सिर उठाया और उसकी किल्लत एक राजनीतिक मसला बनी उससे यही पता चलता है कि अतीत के अनुभवों से कोई सीख नहीं ली जा रही है। यदि प्याज की आपूर्ति के मामले में संभावित स्थितियों का वक्त रहते अनुमान लगाकर आवश्यक उपाय कर लिए गए होते तो शायद उसके निर्यात पर रोक लगाने की जरूरत नहीं पड़ती और इतनी हाय-तौबा भी नहीं मचती।

नारद कांड में कार्रवाई

बंगाल में नारद स्टिंग ऑपरेशन कांड में पहली कार्रवाई आइपीएस अफसर एसएमएच मिर्जा पर हुई है। इसी के साथ सीबीआइ ने भाजपा नेता मुकुल रॉय को भी तलब कर लिया। पहली बार तो उन्होंने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों का हवाला देकर सीबीआइ के समक्ष हाजिर होने से इन्कार कर दिया था, लेकिन दूसरा नोटिस मिलने के बाद शनिवार को वे दोपहर करीब दो बजे पूछताछ के लिए सीबीआइ के सॉल्टलेक स्थित दफ्तर में हाजिर हुए। खबर है कि एसएमएच मिर्जा और मुकुल रॉय को आमने-सामने बैठाकर पूछताछ की गई। सीबीआइ ने गुरुवार को इस कांड की जांच के सिलसिले में एसएमएच मिर्जा को गिरफ्तार किया था। 2016 में नारद स्टिंग कांड के वीडियो टेप के सामने आने के बाद यह पहली गिरफ्तारी है। वीडियो फुटेज में तृणमूल के कई वरिष्ठ नेता एक फर्जी कंपनी के प्रतिनिधियों से मदद की एवज में रुपये लेते नजर आए थे। मुकुल रॉय नारद न्यूज पोर्टल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मैथ्यू सैमुअल से बातचीत करते देखे गए हैं। मुकुल रॉय उस वक्त तृणमूल कांग्रेस के महासचिव और राज्यसभा सदस्य थे। मैथ्यू सैमुअल ने ही 2014 में यह स्टिंग ऑपरेशन करने का दावा किया था और 2016 में बंगाल के विधानसभा चुनाव के दौरान इसका वीडियो सामने आया था। नारद कांड में मुकुल रॉय के अलावा कोलकाता के पूर्व मेयर शोभन चटर्जी भी तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। बार-बार सीबीआइ पर सवाल उठाया जाता रहा है कि नारद कांड हो या फिर सारधा चिटफंड घोटाला, सिर्फ विरोधी दलों के नेताओं को ही क्यों परेशान किया जा रहा है। अब नारद मामले में देखा जा रहा है कि पहली गिरफ्तारी के साथ ही सबसे पहले मुकुल रॉय को तलब किया गया। उनसे पूछताछ की गई। सीबीआइ दफ्तर से बाहर आने के बाद उन्होंने कहा कि वे जांच में हर तरह से सहयोग करेंगे। उन्होंने रुपये नहीं लिए हैं। स्टिंग के वीडियो में तृणमूल के मंत्री, सांसद एवं नेता रुपये लेते दिखाई दिए हैं, लेकिन मुकुल रॉय रुपये नहीं ले रहे हैं। हालांकि वे काम हो जाएगा और एसएमएच मिर्जा से मिलें कहते सुनाई दे रहे हैं। वहीं एक सवाल यह भी उठ रहा है कि एसएमएच मिर्जा की गिरफ्तारी के बाद और किसी की गिरफ्तारी होगी या नहीं, क्योंकि कांग्रेस एवं माकपा नेता सिर्फ तृणमूल पर ही नहीं, भाजपा पर भी निशाना साध रहे हैं। नारद स्टिंग कांड में फंसे दो नेता अभी भाजपा में हैं।

गांधी के स्मरण का सही तरीका

हृदयनारायण दीक्षित

पूरे जीवन नहीं तो क्या एक माह भी हम गांधी जैसे जी सकते हैं? इसी प्रश्न का उत्तर गांधी जयंती पर उनका सही स्मरण है जो हमारी कई मुश्किलों को हल कर सकता है

अव्याख्येय की व्याख्या असंभव। तब शब्द, उदाहरण, प्रतीक और प्रतिमान काम नहीं आते। इतिहास में साधारण से असाधारण हो जाने वाले व्यक्तित्वों की सूची बड़ी है, लेकिन साधारण से सर्वोत्तम साधारण होने का उदाहरण केवल गांधी जी हैं। गांधी विश्व इतिहास की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति हैं। वह गृहस्थ थे। महात्मा थे। वेदांती थे। राजनीतिक कार्यकर्ता थे। आंदोलनकारी थे। सत्याग्रही थे। सत्य प्रयोग के अभ्यासी थे। दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य से टकरा रहे थे। ब्रिटिश सभ्यता और संस्कृति को उसके ही मैदान में ललकार रहे थे। उन्होंने ब्रिटिश संसद को वेश्या कहा। ब्रिटिश सत्ता बौखलाई थी। अब उसी ब्रिटिश संसद परिसर में गांधी जी की मूर्ति है। वह ईश्वरनिष्ठ थे, लेकिन ईश्वर को लेकर जिज्ञासु भी। भारतीय संस्कृति के शील आचार के अभ्यासी गांधी भारत के राष्ट्रपिता कहे गए। संयुक्त राष्ट्र ने 2007 में गांधी जयंती को अंतरराष्ट्रीय दिवस घोषित किया था। इस साल दो दिन बाद उनकी 150वीं जयंती पर भारत और विश्व में विशेष आयोजन हैं। मूलभूत प्रश्न है कि हम भारतीय उन्हें कैसे याद करें? क्या उनके व्यक्तित्व की शल्य परीक्षा करें? क्या उन पर व्याख्यान देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री करें? करें तो क्या करें?

गांधी विश्व इतिहास का आश्चर्य हैं। विराट व्यक्तित्व के कारण वह भाषा और परिभाषा की पकड़ में नहीं आते। गांधी के जीवन और दर्शन पर तमाम अंतरराष्ट्रीय शोध हुए जो अनवरत जारी हैं। गांधी अफ्रीकी नेता नेल्सन मंडेला की प्रेरणा थे। युगांडा में नील नदी के उद्गम पर गांधी मूर्ति का दर्शन मैंने पांच दिन पूर्व ही किया है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा गांधी के प्रशंसक हैं। मार्टिन लूथर किंग गांधी के प्रशंसक थे। गांधी पुराण पुरुष जैसे हैं। उन्होंने सार्वजनिक जीवन की आकाश स्पर्शी मर्यादा रेखा खींची। कोई दूसरा महान नेता भी त्याग, सादगी और शील की उस मर्यादा तक नहीं पहुंच सका। उन्होंने 1909 में 'हिंद स्वराज' लिखी थी। पुस्तक अंतरराष्ट्रीय चर्चा में आई। धम्म पद बौद्धों का आस्था ग्रंथ है। तिब्बती नेता सामदोंग रिपोछे ने इसकी तुलना 'धम्म पद' से की। ईसा मसीह का पहाड़ पर दिया गया प्रवचन 'सरमन ऑन दि माउंट' कहा जाता है। अमेरिकी विद्वानों ने हिंद स्वराज को 'सरमन ऑन सी' कहा था। डरी ब्रिटिश सत्ता ने पुस्तक पर प्रतिबंध लगाया। जन-प्रतिक्रिया के बाद प्रतिबंध हटा। पुस्तक में पश्चिमी सभ्यता और संसद पर भी तीखी टिप्पणियां हैं।

गांधी सबकी समृद्धि चाहते थे। गरीबी आर्थिक होती है, मानसिक भी होती है। 'हिंद स्वराज' में 'स्वैच्छिक गरीबी' की चर्चा है, 'जैसे भोगवाद से संयम ब्रह्मचर्य है, वैसे ही उपभोक्तावाद से संयम स्वैच्छिक गरीबी का चयन है।' यहां गरीबी का अर्थ हिंसक उपभोक्तावाद से बचाव है। भौतिक साधन स्टेटस सिंबल हैं, लेकिन उन्होंने आत्मसंयम को स्टेटस सिंबल बनाया। खादी चरखा और त्याग गांधी समर्थकों के स्टेटस सिंबल बन रहे थे। गांधी जी के ऐसे आग्रह पिछड़ेपन भी कहे गए, लेकिन गांधी गहरे अनुभूतिकर्ता थे। गीत-संगीत जैसी कला विधाएं आधुनिक उपलब्धियां हैं। गांधी जी ने लिखा था, 'हम पर संगीत का बहुत प्रभाव पड़ता है। वेदों की रचना संगीत के आधार पर हुई जान पड़ती है। मधुर संगीत आंतरिक उद्विग्नता को शांत करता है। संगीत की शुद्ध शिक्षा मिले तो बच्चों का समय बचे।' क्या यह पिछड़े सत्याग्रही का संगीत प्रेम है? सौंदर्यबोध विरलों को ही होता है। गांधी ने ब्रह्मपुत्र नदी का वर्णन किया, 'नदी की भव्य शांति मनोहर प्रतीत होती है। बादलों में छुपा चंद्र जल को प्रकाशित कर रहा है, लेकिन मेरा मन अशांत है।' दुनिया बदलने के इच्छुक व्यक्ति की चित्त अशांति स्वाभाविक है।

गांधी जी लक्ष्य और साधन दोनों की पवित्रता के पक्षधर थे। लिखा है कि साधन बीज है और साधन प्राप्त किए जाने का माध्यम पेड़ है। बीज और पेड़ के संबंध आत्मीय हैं, वैसे ही साध्य और साधन के संबंध हैं।' आत्मबल भारतीय सभ्यता का सार है। गांधी जी ने इसे सभ्यता की मस्ती और खुमारी कहा है। यहां भारतीय सभ्यता की गहन समझ का आनंद है। उन्होंने सभ्यताओं की तुलना में लिखा-'हिंदुस्तान की सभ्यता में नीति की मजबूती है, पश्चिमी सभ्यता का झुकाव अनीति को मजबूत करने पर है।' भारत और भारतीयता गर्व करने लायक है। गांधी जी ने इसके पक्ष में एचएस मेन, विलियम हंटर आदि कई पश्चिमी विद्वानों के उदाहरण भी दिए थे। गांधी जी के विचार और कर्म भारतीय सभ्यता का आधुनिक व्यवहार शास्त्र हैं। आधुनिक उपभोक्तावादी जीवन का संपूर्ण विकल्प भी हैं।

गांधी पंथिक अंधविश्वासी नहीं थे। उन्होंने 1894 में अपने प्रश्नों की सूची बनाई थी। जैसे 'आत्मा क्या है? क्या वह कर्त्ता है? क्या उस पर कर्म का प्रभाव होता है? ईश्वर क्या है? क्या जगत्कर्ता है? मोक्ष क्या है? क्या देह में रहते हुए वह जाना जा सकता है? आर्य धर्म क्या है? वेद किसने रचे? क्या अनादि हैं? अनादि का अर्थ क्या है? गीता किसने रची? ईसाइयों के अनुसार बाइबिल ईश्वर प्रेरित है? क्या ईशा ईश्वर के पुत्र थे? क्या अनीति का अंत होगा?' अंतिम प्रश्न 'अनीति' का खात्मा है। शेष प्रश्न वैज्ञानिक जिज्ञासा हैं। वह पूरी जिजीविषा के साथ अनीति से ही टकरा रहे थे। उन्होंने गीता पर किताब लिखी। पुस्तक में प्रकृति पर जोर है, लेकिन उन्होंने इस प्रत्यक्ष ब्रह्म के सामने भी समर्पण नहीं किया। उन्होंने 1916 में अछूत समस्या पर कहा, 'मैं नहीं मानता कि यह कलंक अनादि काल से चला रहा है है। अस्पृश्यता का शर्मनाक भूत हमारे इतिहास में तब आया होगा जब हम कालगति में पतन की पराकाष्ठा पर थे।'

गांधी जी जीवित होते तो 150 वर्ष के होते। तब क्या होता? वह ब्रिटिश संसदीय पद्धति के विरोधी थे। उनका स्वप्न था कि 'सांसदों को संसद में भलाई के लिए जाना चाहिए। संसद को श्रेष्ठ काम करने चाहिए।' वह शिक्षा को श्रेष्ठ मनुष्य बनाने का उपकरण मानते थे। ऐसा प्रायः नहीं हुआ। कुछ विवेचक उनकी असफलताओं का उल्लेख करते हैं। वह खिलाफत आंदोलन में शामिल हुए। यह निर्णय गलत था। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह स्वाधीनता आंदोलन में मुसलमानों का सहयोग चाहते थे। मई 1947 में अरुणा आसफ अली ने उनसे पूछा, 'क्या पाकिस्तान का कोई विकल्प है? गांधी जी ने कहा कि इसका विकल्प अखंड भारत ही है।' भारत बंटा, पाकिस्तान अब आतंकी छावनी है, लेकिन इसके दोषी गांधी नहीं, तत्कालीन नेतृत्व ही है। यही नेतृत्व भारत को अंग्रेजों द्वारा बनाया राष्ट्र मानता था। गांधी ने लिखा, 'यह धारणा अंग्रेजों की है। भारत अंग्रेजी राज के पहले भी राष्ट्र था।' गांधी ने लोकमत के लिए इंडियन ओपिनियन, हरिजन जैसे तमाम अखबार निकाले। गांधी का व्यक्तित्व आकाशस्पर्शी है। गांधी किसी पद के अभिलाषी नहीं थे। नाना रूप। विविध आयाम। कैसे करें उनका स्मरण? पूरे जीवन नहीं तो क्या एक माह भी हम गांधी जैसे जी सकते हैं? इसी प्रश्न का उत्तर गांधी जयंती पर उनका सही स्मरण है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

पाकिस्तान को बड़ा झटका देने का वक्त

दिव्य कुमार सोती

पाक की छटपटाहट का इस्तेमाल भारत पीओके के ज्यादा से ज्यादा इलाकों को हासिल करने में कर सकता है

अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद घाटी में जैसे उपद्रव की आशंका जताई जा रही थी, वैसा अब तक कुछ देखने को नहीं मिला है। यह सही है कि उपद्रवी पाकिस्तानपरस्त नेताओं का जेल में होना और इंटरनेट पर प्रतिबंध भी एक मुख्य कारण है। हालांकि वर्तमान स्थिति में यह पाकिस्तान के लिए निराशाजनक है, क्योंकि कश्मीर में उपद्रव पर ही उसकी सारी कूटनीति निर्भर है। जब-जब कश्मीर आंतरिक तौर पर स्थिर हुआ है तब-तब पाकिस्तान ने उसे अस्थिर करने की कोशिश की है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 5 अगस्त, 1965 को पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में शुरू किया गया ऑपरेशन जिब्राल्टर था जिसके तहत जनरल अयूब खान ने पाक के कब्जे वाले कश्मीर यानी पीओके के लोगों को आतंकी प्रशिक्षण दिलवाकर पाक सैनिकों के साथ कश्मीर घाटी में भारतीय सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के लिए भेजा था। अयूब खान की योजना यह थी कि पीओके से आने वाले आतंकी आसानी से आम जनता में घुलमिल जाएंगे और घाटी में भारत के विरुद्ध बड़े पैमाने पर विद्रोह भड़क जाएगा, जिसका फायदा उठाकर पाक फौज कश्मीर पर बड़ा हमला कर वहां अपना कब्जा जमा लेगी। हालांकि भारतीय सेना की सजगता के चलते पाकिस्तान की यह कोशिश तकरीबन नाकाम रही थी। यहां यह समझना आवश्यक है कि चाहे 1947 हो या 1965 या फिर 1999 का कारगिल युद्ध, पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठ कराकर कब्जा करने के फॉर्मूले को ही अलग-अलग तरह से इस्तेमाल किया है। इसका कारण यह है कि कश्मीर को कब्जाना पहले दिन से पाकिस्तान का मुख्य उद्देश्य रहा है और पाकिस्तान में हर स्तर पर पिछले 70 साल से इसे लेकर मंथन हो चुका है।

इमरान खान के अनाड़ी मंत्रियों और बिलावल भुट्टो जैसे अनुभवहीन विपक्षी नेताओं को अलग रख अगर पाक फौज की बात करें तो वह अच्छे से जानती है कि कश्मीर को लेकर ज्यादा से ज्यादा क्या किया जा सकता है और हमेशा से उसके विकल्प सीमित रहे हैं। 1965 में जब जनरल अयूब खान ने भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ा था तब भारत तीन साल पहले ही चीन से युद्ध हार चुका था, अमेरिका पाकिस्तान को भारी सैन्य मदद दे रहा था और चीन को पाकिस्तान ने 1963 में ही पीओके का एक हिस्सा दे दिया था। अयूब खान के शासन में पाकिस्तान में काफी विकास हुआ था, जबकि भारत की आर्थिक स्थिति खास अच्छी नहीं थी। आज स्थिति एकदम उलट है। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति बेहद खराब है और आतंक को समर्थन देने के चलते अमेरिका ने पाक को मदद बंद कर दी है। अंतरराष्ट्रीय बिरादरी पाकिस्तान के शोरशराबे पर कोई खास ध्यान नहीं दे रही है। चीन जरूर पाकिस्तान के साथ है, पर वह अमेरिका के साथ ट्रेड वॉर में उलझा है और हांगकांग में चल रहे ऐतिहासिक प्रदर्शनों से जूझ रहा है। ऐसी स्थिति में वह पाकिस्तान के लिए भारत के साथ अपने व्यापक व्यापारिक हितों को दांव पर लगाने से बच रहा है। जम्मू-कश्मीर का भारत में पूर्ण एकीकरण और लद्दाख का केंद्रशासित प्रदेश बनना चीन के लिए भी बड़ा झटका है, क्योंकि वह भी पाकिस्तान की तरह कश्मीर और लद्दाख के इलाकों पर कब्जा जमाए है। साथ ही वह भारत के अब और तेजी से उभार को लेकर चिंतित है। फिलहाल वह भारत से सीधा टकराव भले न मोल ले, पर पाकिस्तान को भारत को जख्मी करने से रोकेगा, इसमें जरूर संदेह है।

इस सबसे अलग पाकिस्तान के शासकों की समस्या यह है कि उन्होंने 1947 से ही कश्मीर को हासिल करने का सपना जनता को दिखाया है और पाकिस्तानी समाज को जिहादी विचारधारा में लैस कर डाला है। पाकिस्तानी फौज हर एक युद्ध में हारने के बावजूद पाकिस्तानी जनता के सामने खुद को विजयी बताती आई है। ऐसे में भारत द्वारा जम्मू-कश्मीर का पूर्ण एकीकरण किए जाने के मौके पर पाक फौज हाथ पर हाथ धरे बैठी नहीं दिख सकती। इसलिए वह देर सवेर कुछ न कुछ जरूर करेगी। इसमें भारत में आतंकी हमले कराने से लेकर कश्मीर में 1965 जैसा कुछ करने का प्रयास शामिल हो सकता है। फिलहाल वह पीओके में रहने वाले कश्मीरियों का एक बार फिर से इस्तेमाल करने की कोशिश में है। 1965 में जब पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठ कराई थी तो भारत ने जवाबी कार्रवाई करते हुए नियंत्रण रेखा पार कर पीओके के सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हाजी पीर दर्रे से पाक फौज को खदेड़ दिया था। हालांकि बाद में ताशकंद समझौते के तहत दुर्भाग्यवश यह जीता हुआ इलाका लौटा दिया था। आज तक पाक फौज कश्मीर में आतंकी घुसपैठ कराने के लिए इसी रास्ते का इस्तेमाल करती है, परंतु अब भारत अनुच्छेद 370 खत्म किए जाने के बाद की परिस्थिति में पैदा हुई पाकिस्तान की छटपटाहट और पाक फौज की कुछ कर दिखाने की मजबूरी का इस्तेमाल पीओके के ज्यादा से ज्यादा हिस्सों को हासिल करने में कर सकता है।

अब अंतरराष्ट्रीय समीकरण ऐसे बन गए हैं कि किसी भी पाकिस्तानी दुस्साहस की सूरत में पीओके में भारत की जवाबी कार्रवाई को पूरा अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिलेगा। जैसा बालाकोट और 370 खत्म करने पर मिला। ऐसी स्थिति में जीते हुए इलाकों को लौटाने का भारत पर कोई दबाव भी नहीं होगा। डोनाल्ड ट्रंप द्वारा तालिबान के साथ लंबे समय से चल रही शांति वार्ता रद किए जाने के बाद फिलहाल पाकिस्तान के हाथ से आखिरी पत्ता भी निकल गया है। ट्रंप अगले चुनाव से पहले अमेरिकी सैनिकों को अफगानिस्तान से निकाल कर घर वापस लाना चाहते थे, ताकि अमेरिकी इतिहास के सबसे लंबे चलने वाले युद्ध को समाप्त करने का श्रेय ले सकें, पर आइएसआइ की चालबाजियों के चलते ऐसा नहीं हो सका। भारत को अमेरिकी नीतिकारों को समझाना होगा कि बिना बड़ा झटका खाए पाक फौज अफगानिस्तान में शांति का रास्ता नहीं खुलने देगी और गुलाम कश्मीर को खोना ही वह बड़ा झटका है। ऐसा होने पर चीन-पाक सामरिक गठजोड़ भी काफी हद तक अर्थहीन हो जाएगा जिससे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी शक्ति का विस्तार भी रुक जाएगा, जो पीओके से होती हुई पाकिस्तान के जरिये अरब सागर, फारस की खाड़ी और अफगानिस्तान में फैलना चाहती है।

(लेखक काउंसिल फॉर स्ट्रैटेजिक अफेयर्स से संबद्ध सामरिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

दृष्टिकोण

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का कहना था कि सपना वह नहीं है जो आप नींद में देखते हैं। यह तो एक ऐसी चीज है जो नींद ही नहीं आने देती। ऐसा नहीं है कि केवल महान हस्तियों पर ही यह बात लागू होती है। आज तो हमारे इर्दगिर्द अनेकों लोग ऐसे हैं जो इस बात को मानते हैं और कड़ी मेहनत कर अपनी किस्मत को अपने हाथों में कैद कर लेते हैं। किस्मत व्यक्ति खुद बनाता है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम गुलाबों की टहनियों पर कांटे देखते हैं अथवा कंटीली झाड़ियों पर गुलाब।

संकल्प के धनी व्यक्ति समस्याओं से ही अवसर उत्पन्न कर लेते हैं। ऐसे लोग परेशानियों को कभी अपने मार्ग की बाधा नहीं समझते। अपने सपनों को इतना बड़ा कर लेते हैं कि बाधाएं उनके पैरों में पंख लगा देती हैं। इन्हीं पंखों के माध्यम से वे धीरे-धीरे उड़ान भरते हैं और फिर स्वयं को इतना मजबूत बना लेते हैं कि एक समय दूसरों को पंख प्रदान करने में सक्षम हो जाते हैं। परिस्थितियां कभी भी किसी व्यक्ति के मार्ग में बेड़ियां नहीं डाल सकतीं, बशर्ते व्यक्ति के अंदर हौसला और उत्साह हो। जो व्यक्ति रचनात्मक और क्रियाशील होते हैं, वे अपने लिए कहीं से भी सीढ़ी उत्पन्न कर लेते हैं। धाविका हिमा दास ने यदि आज पूरे विश्व में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है तो इसलिए, क्योंकि उनके अंदर एक जुनून था और आगे बढ़ने की ललक थी। इसलिए कोई भी बेड़ी हिमा को देर तक नहीं जकड़ पाई। जब उनके पास दौड़ने के लिए जूते नहीं होते थे तो दौड़ने का एक नया तरीका निकाला और वह रेत में दौड़ने का अभ्यास करने लगीं। रेत पर दौड़ने के अभ्यास ने ही उन्हें सबसे अलग कर सर्वश्रेष्ठ धावकों में खड़ा कर दिया।

परिस्थितियां चाहे जैसी हों, पर यदि अंदरूनी क्षमता मजबूत है तो वह दूसरी जगह से अपने लिए कोई न कोई मार्ग अवश्य निकाल लेगा। बेशक आज आपके पास सुविधाएं न हों, मार्ग न हों, लेकिन यदि आप इसी समय से नए दृष्टिकोण के साथ एक नई राह को अपनाएंगे तो आपके मार्ग में बंद हर दृष्टिकोण खुल जाएंगे और आपको विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाएंगे।

रेनू सैनी

स्वच्छता के मोर्चे पर बड़ी उपलब्धि

सुधीर कुमार

शौचालय का सीधा संबंध स्वच्छता से होता है, जो मानव के स्वास्थ्य और उसकी उत्पादकता को प्रभावित करती है

दो अक्टूबर, 2014 को मोदी सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान का आगाज करते हुए संपूर्ण देश को खुले में शौच कुप्रथा से मुक्ति दिलाने का आह्वान किया था। पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के मुताबिक यह लक्ष्य तय समय सीमा के भीतर पूरा हो चुका है। बीते पांच वर्षों में सरकार द्वारा दस करोड़ से भी अधिक शौचालयों का निर्माण कराया गया है। देश के प्रत्येक घर को शौचालय की सुविधा से जोड़ पाना निश्चय ही एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। शौचालय प्रत्येक नागरिक की बुनियादी आवश्यकता है, परंतु आर्थिक विपन्नता तथा पुरातन मानसिकता की वजह से मुख्यतः ग्रामीण समाज के लोग इसे अपनाने से इन्कार करते थे, लेकिन सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दिए जाने तथा जागरूकता के लिए चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की बदौलत ही इस स्थिति में बदलाव लाना संभव हो सका। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की आधी से अधिक आबादी खुले में शौच जाने को विवश थी, जिसकी संख्या अब नगण्य है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस उपलब्धि को गांधी जी को समर्पित किया है।

शौचालय का सीधा संबंध स्वच्छता से होता है, जो मानव के स्वास्थ्य और उसकी उत्पादकता को प्रभावित करती है। शौचालय देश के विकास और महिला सशक्तीकरण की वैचारिकी से भी जुड़ा है। नियमित शौचालय का इस्तेमाल कई प्रकार के बीमारियों से भी हमें बचाता है। खुले में शौच जाने का साफ अर्थ है-दर्जनभर बीमारियों को स्वतः आमंत्रण देना। विश्व स्वास्थ्य संगठन की मानें तो विकासशील देशों में होने वाली 80 फीसद बीमारियों का एकमात्र कारण खुले में शौच जाना है। खुले में शौच जाने से न सिर्फ भूमिगत जल की गुणवत्ता का ह्रास होता है, अपितु यह मनुष्यों में उल्टी, डायरिया, हैजा और टाइफाइड जैसी जल-जनित बीमारियों को भी जन्म देता है। दूसरी तरफ खुले में मल-मूत्र का त्याग वातावरण को भी मैला करता है। कई बार मलों से निकलने वाली दुर्गंध सांस लेने में तकलीफ देती है और मन भी खराब करती है।

वैसे तो खुले में शौच जाने से हर कोई खुद को असहज महसूस करता ही है, लेकिन इस मामले में महिलाओं और बच्चियों को अपेक्षाकृत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। एक सर्वे के मुताबिक खुले में शौच जाने वालों में से करीब 35 फीसद महिलाओं ने कभी-न-कभी यौन उत्पीड़न झेला है। प्रतिदिन दो से तीन बार शौच के लिए घर से बाहर खुले में जाना महिलाओं के लिए आसान नहीं होता, उन्हें हमेशा अनहोनी का डर सताता रहता है। वहीं स्कूलों में शौचालय न रहने से गांव-समाज की बेटियां भी स्कूल जाने से कतराती हैं, जिससे उनकी पढ़ाई बाधित होती है। यह सुखद है कि नवीन पीढ़ी शौचालय की महत्ता को समझ रही है। साक्षर तथा जागरूक होकर महिलाएं भी शौचालय निर्माण को लेकर मुखर हुई हैं, जिससे शौचालय निर्माण को बल मिला है। आज पूरा देश इस उपलब्धि पर गर्व महसूस कर रहा है।

(लेखक बीएचयू में अध्येता हैं)

एक-दूसरे के पूरक हैं भारत और अमेरिका

'अमेरिका से दोस्ती के साथ मतभेद भी' शीर्षक से लिखे अपने लेख में सी. उदयभास्कर ने ह्यूस्टन के 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम के बाद भारत-अमेरिकाके बीच उभरे मतभेद की जो चर्चा की है, उसका अस्तित्व व्यापारिक लाभ-हानि की सौदेबाजी तक ही सीमित है। हकीकत में मोदी की कार्यशैली और विश्वसनीयता का अमेरिका कायल है, क्योंकि वर्तमान में विश्वमंच पर मोदी का जो दबदबा है, अमेरिका उसकी अनदेखी नहीं कर सकता। वैसे भी व्यापार के साथ-साथ अन्य राजनयिक संबंधों में भारत और अमेरिका एक-दूसरे के पूरक हैं, इसका अहसास ह्यूस्टन में भारतीय मूल के लोगों के बीच आयोजित 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम में अमेरिकी राष्ट्रपति की उपस्थिति से दोनों देशों को बखूबी हुआ। वरना यह वही अमेरिका है जो स्वार्थवश हमेशा पाकिस्तान के कंधे पर रखकर बंदूक चलाता रहता था। अमेरिका की इस नीति का फायदा साम्राज्यवादी चीन ने खूब उठाया और गाहे-बगाहे वह भारतीय भू-भाग को दबाने की हिमाकत करता रहा, लेकिन शायद वह पहला अवसर था जब डोकलाम मुद्दे पर भारत की दृढ़ता ने चीन को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। अमेरिका सहित विश्व के अन्य देशों को चीन के विरुद्ध भारत की यह हेकड़ी अच्छी लगी। ऐसे में एशिया महाद्वीप के अंदर मोदी के नेतृत्व में उभरने वाले भारत से विश्व की अपेक्षाएं बढ़ती गईं। इस दृष्टि से इजरायल से लेकर फ्रांस, रूस, सऊदी अरब आदि देशों ने मोदी को हाथों-हाथ लिया। अमेरिका भी इसमें पीछे नहीं रहा और उसने ह्यूस्टन में भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिकों के बीच मोदी का जो शानदार स्वागत किया, उसे देश-दुनिया ने देखा। यद्यपि इसमें अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप का स्वार्थ भी था, जिसे मोदी ने ट्रंप को दोबारा अमेरिका का राष्ट्रपति बनने की कामना के रूप में प्रकट भी कर दिया, लेकिन इससे हटकर दूसरी खास बात यह थी कि भारतीय मूल के इस कार्यक्रम में अमेरिका के विपक्षी प्रतिनिधियों ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इस दृष्टि से अमेरिकी शासन के पक्ष-विपक्ष के बीच उभरती भारतीय प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता यही संदेश दे रही है कि अब अमेरिका और भारत एक-दूसरे के पूरक बनते जा रहे हैं।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

राजनीतिक मर्यादा

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में जिस तरह भारत के प्रति जहर उगला, उसकी जितनी भी भर्त्सना की जाए कम है। वहीं भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंच से विश्व को महात्मा बुद्ध और स्वामी विवेकानंद का संदेश दिया। इमरान खान पाकिस्तान में पल रहे आतंकवाद का औचित्य सिद्ध करते नजर आए। इतना ही नहीं, उन्होंने भारत के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को भी जमकर कोसा। भारत को कोसने से पहले इमरान खान को पाकिस्तान के हालात पर भी गौर करना चाहिए था। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित 130 दुर्दांत आतंकी पाकिस्तान में शरण लिए बैठे हैं। अलकायदा और दूसरे आतंकी संगठन के आतंकी सरकारी सहायता पर पल रहे हैं। हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे आतंकी सरगना वहां बिना किसी बाधा के अपना एजेंडा चला रहे हैं। दूसरी ओर पाकिस्तान अपनी आंतरिक समस्याओं से बुरी तरह ग्रस्त है। पाक अधिकृत कश्मीर में पाकिस्तान से आजादी लेने की आवाज उठ रही है। निरंतर उपेक्षा और उत्पीड़न से त्रस्त बलूचिस्तान में भी विद्रोह के स्वर गूंज रहे हैं, किंतु इमरान खान को इसकी चिंता नहीं है। वे केवल आतंक को बढ़ावा देकर भारत को पस्त करना चाहते हैं। अब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने वैश्विक मंच से फिर भारत को परमाणु युद्ध की धमकी दी है। पाकिस्तान उस पहलवान की तरह व्यवहार कर रहा है जो बार-बार हार कर भी जीते हुए को पहलवान को चुनौती देता है। इमरान खान को राजनीतिक मर्यादा का सलीका सीखना होगा, अन्यथा वह पाकिस्तान का बड़ा नुकसान कर देंगे।

रणजीत वर्मा, फरीदाबाद

हनीट्रैप में फंसे नेता

मध